**गिरिधर** के समय तथा जीवन के संबंध में प्रामाणिक रूप से कुछ कहना कठिन है, क्योंकि अंतःसाक्ष्य या बहिःसाक्ष्य, किसी से भी कोई आधार प्राप्त नहीं है। इनकी कुंडलियाँ अधिकतर अवधी भाषा में मिलती हैं। इससे अनुमान होता है कि ये अवध प्रदेश के रहनेवाले थे। नाम के साथ 'कविराय' या 'कविराज' लगे होने से ये भाट जाति के प्रतीत होते हैं। इलाहाबाद के आस-पास के भाटों से पूछने पर भी इसी की पुष्टि होती है। ये भाट इनकी कुंडलियाँ तथा इसी प्रकार के अन्य छंद गा-गाकर भीख माँगते फिरते हैं। शिवसिंह सेंगर के अनुसार इनका जन्म सन् 1713 में हुआ था। इस आधार पर इनका रचनाकाल 18 वीं सदी का मध्य माना जा सकता है।

गुन के गाहक सहस नर, बिन गुन लहै न कोय।
जैसे कागा- कोकिला, शब्द सुनै सब कोय।।
शब्द सुनै सब कोय, कोकिला सबै सुहावन।
दोऊ को इक रंग, काग सब भये अलावा।
कह गिरिधर कविराय, सुनौ हो ठाकुर मन के।
बिन गुण लहै न कोय, सहस नर गाहक गुन के।।

**********

साईं बैर न कीजिये, गुरु, पंडित, कवि, यार।
बेटा, बनता, पंवरिया, यज्ञ- करावनहार ।।
यज्ञ- करावनहार, राज मंत्री जो होई।
विप्र, पड़ौसी, वैद्य, आपकी तपै रसोई।।
कह गिरिधर कविराय, जुगनते यह चलि आई।
इन तेरह सौं तरह, दिये बनि आवै साईं।।

**********

साईं बेटा बाप के, बिगरे भयो अकाज।
हिरनाकस्यप, कंस को, गयउ दुहुंन को राज।।
गयउ दुहुंन को राज, बाप बेटा में बिगरी।
दुश्मन दावागीर, हँसे बहुमण्डल नगरी।
कह गिरिधर कविराय, जुगन या हो चलि आई ।
पिता- पुत्र के वैर, नफा कहु कौने, साईं।।

**********

साईं अपने भ्रात को, कबहुं न दीजे त्रास।
पलक दूर नहिं कीजिए, सदा राखिए पास।।
सदा राखिए पास, त्रास कबहूँ नहिं दीजै।
त्रास दियो लंकेश, ताहि की गति सुनि लीजै।
कह गिरिधर कविराय, राम सों मिलिगो जाई।
पाय विभीषण राज्य, लंक पति बाह्य साईं।।

**********

कमरी थोरे दाम की, आवै बहुतै काम।
खासा मलमल बाफता, उनकर राखै मान।।
उनकर राखै मान, बुन्द जंहा आड़े आवै।
बकुचा बांधे मोट, रात को झारि बिछावै।
कह गिरिधर कविराय, मिलति हैं थोरी दमरी ।
सब दिन राखै साथ, बड़ी मर्यादा कमरी।।

**********

बिना विचारे जो करै, सो पाछै पछताय।
काम बिहारी आपनो, जग में होत हँसाय ।।
जग में होत हँसाय, चित्त में चैन न आवै।
खान- पान सनमान, राग रंग मनहि न भावै।
कह गिरिधर कविराय, दुःख कछु करते न टारे।
खटकत है जिय मांहि, कियो जो बिना विचारे ।।

**********

बीती ताहि बिहारी दे, आगे की सुधि लेइ।
जो बनि आवै सहज में, ताही में चित देइ।।
ताही में चित देइ, बात जोई बनि आवै।
दुर्जन हँसे न कोय, चित्त में खता न पावै।
कह गिरिधर कविराय, यहै करु मन परतीती।
आगे की सुधि लेइ, समझ बीती सो बीती।।

**********

साईं समय न चूकिए, यथाशक्ति सनमान।
का जानै को आग है, तेरी परिवार प्रमान।।
तेरी परिवार प्रमान, समय असमय तकि आवै।
ताको तू मन खोलि, अंक भरि हृदय लखावै।
कह गिरिधर कविराय, सबै या मैं सधि जाई।
शीतल जल, फल फूल, समय जनि चूको, साईं।।

**********

लाठी में गुण बहुत हैं, सदा राखिए संग।
गहिरि नदी, नारा जहाँ, तहाँ बचावै अंग।।
तहाँ बचावै अंग, झपटि कुत्ता को मारै।
दुश्मन दावागीर, होय तिनहूं को झारै ।
कह गिरिधर कविराय, सुनो हो धर के पानी।
सब हथियारन छोड़ि, हाथ में लीजै लाठी ।।

**********

बेटा बिगरो बाप सों, करि तिरियन को नेहु।
लटापटी हे लगी, मोहिं जुदा करि देहु॥
मोहिं जुदा करि देहु, घरी मा माया मेरी।
लेहौं घर अरु बार, करौं मैं फ़जिहत तेरी॥
कह गिरिधर कबिराय सुनो गदहा के लेटा।
समय पर्यो है आय बाप से झगरत बेटा॥

**********